शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत
हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी
دامت برکاتہم العالیہ

ना चाक़ियों का इलाज

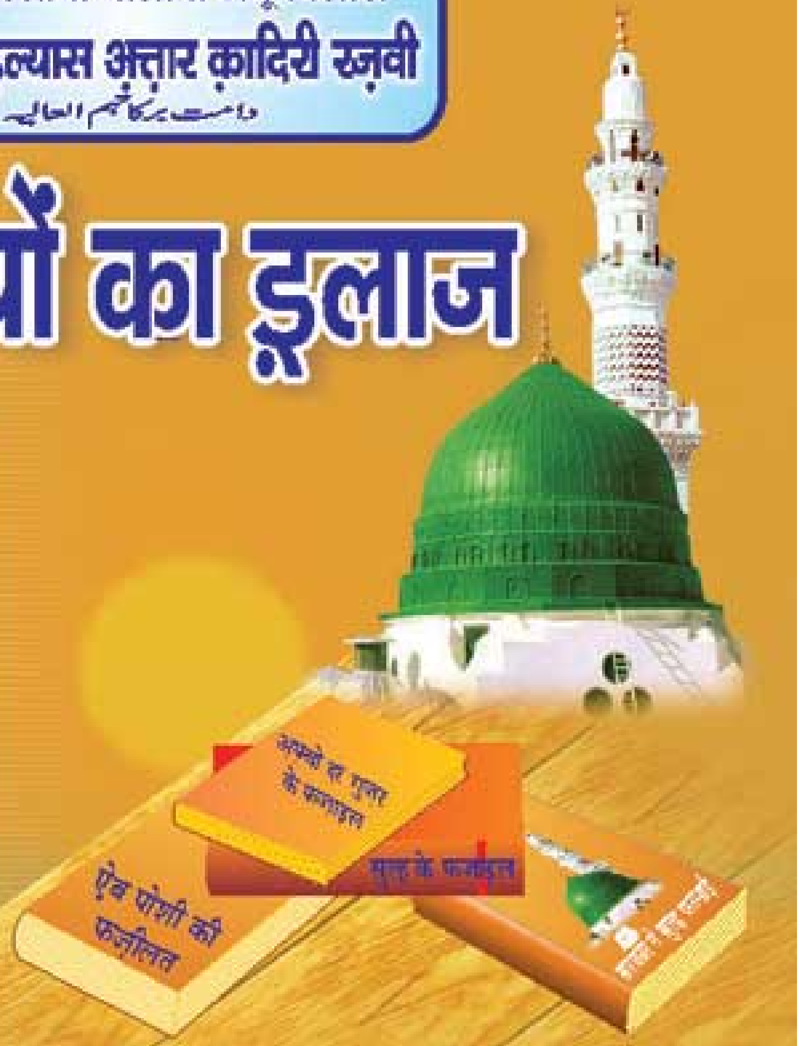

इस रिसाले में ....

- जहन्नम के ह़क़दार मत बनिये !
- शैत़ान आपस में लड़वाता है
- बिला वजह क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ गुनाह है
- मुसल्मान को कैसा होना चाहिये ?
- झगड़े से बचने की फ़ज़ीलत
- बुरा चर्चा करना बाइ़से अ़ज़ाब है
- दुश्मन को दोस्त बनाने का क़ुरआनी नुस्ख़ा
- जन्नत पाने के तीन नुस्ख़े
- अल्लाह सुल्ह़ करवाएगा

पेशकश: मजलिसे मक्त-बतुल मदीना

मक्त-बतुल मदीना®
مکتبۃ المدینہ®
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Ph:91-79- 25391168 E:mail: maktabahind@hotmail.com
www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इस रिसाले के में बारे में.......

यूरोपियन मुमालिक के एक शहर के तन्ज़ीमी ज़िम्मादार इस्लामी भाइयों के दरमियान शकर रन्जियां चल रही थीं, **सुल्ह** की कोई मज़बूत सूरत नहीं बन पाती थी और दा'वते इस्लामी का म-दनी काम बहुत मुतअस्सिर था। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इस त़रफ़ तवज्जोह दिलाई गई तो आप ने एक मक्तूब दिया। चुनान्चे मजलिसे बैनल अक़्वामी उमूर के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई वोह मक्तूब ले कर बाबुल मदीना कराची से सफ़र कर के र-जबुल मुरज्जब सिने 1427 हिजरी में मत़्लूबा शहर पहुंचे। इस्लामी भाइयों को जम्अ़ कर के "मक्तूबे अ़त्त़ार" पढ़ कर सुनाया गया, सुन कर सारे बे क़रार व अश्कबार हो गए, रो रो कर एक दूसरे से मुआ़फ़िया मांग लीं और सब ने ***सुल्हनामा*** पर दस्तख़त़ कर दिये। इस वाक़िए को ता दमे तह़रीर तक़रीबन चार माह हो चुके हैं, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वहां अब अम्न है, दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों और म-दनी क़ाफ़िलों में तरक़्क़ी की इत्त़िलाआ़त हैं। येह मक्तूब आख़िरत की याद दिलाने वाला, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में तड़पाने वाला और **सुल्ह** सफ़ाई पर उभारने वाला है। म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुखियारी उम्मत के अ़ज़ीम तर मफ़ाद की ख़ात़िर मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्त़ारिय्या की जानिब से इस इन्क़िलाबी "मक्तूबे अ़त्त़ार" को ज़रूरतन तरमीम के साथ ना चाक़ियों का इ़लाज के नाम से पेश किया जा रहा है। जहां भी ज़ाती नाराज़गियों के बाइस़ मुसल्मानों में दो फ़रीक़ बन गए हों, येह रिसाला ना चाक़ियों का इ़लाज पढ़ कर सुना दिया जाए, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ाइफ़ीन के जिगर पाश पाश हो जाएंगे और वोह ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से डर कर **सुल्ह** कर लेंगे।

www.dawateislami.net

रिसाला ना चाक़ियों का इ़लाज में आयात, रिवायात व ह़िकायात की रौशनी में ***चपक़लिशों*** और ज़ाती रंजिशों के नुक़्स़ानात का वोह इ़ब्रत नाक बयान है जो कि नर्म दिलों के लिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मरहमे जराह़त और सख़्त दिलों के लिये ताज़यानए इ़ब्रत स़ाबित होगा। ना चाक़ियों का इ़लाज आप के हाथ में है, जो इ़ब्रत ह़ासिल करे करे और जो न करे न करे, नस़ीब अपना अपना,

फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर
मर्दे नादां पर कलामे नर्मो नाज़ुक बे अस़र

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्त़ारिय्या

21 शव्वालुल मुकर्रम सिने 1427 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 12-11-2006

ना चाक़ियों का इ़लाज

शैत़ान कभी न चाहेगा कि कोई येह मक्तूबे अ़त्त़ार पूरा पढ़े, आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर शैत़ान मर्दूद को ना काम बना दीजिये।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी عُفِيَ عَنْهُ की जानिब से

यूरोपियन मुमालिक के शहर में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का म-दनी काम करने वालों की मजलिसे मुशावरत के निगरान, अराकीन और ज़िम्मादार इस्लामी भाइयों की ख़िदमात में नफ़रतें मिटाने वाले और ***मह़ब्बतें*** फैलाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इमामए पुर अन्वार के बोसे लेता हुवा, गेसूए ख़मदार को चूमता हुवा, मदीने की गलियों में घूमता हुवा, झूमता हुवा मुश्कबार सलाम,

السلام علیکم ور حمۃ اللّٰہ وبرکاتہ. الحمد للّٰہ ربِّ العٰلمین علی کل حال

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गंजीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है: "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर आपस में ***मह़ब्बत*** रखने वाले जब बाहम मिलें और ***मुस़ाफ़ह़ा*** करें और नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।"

(मुस्नदे अबी या'ला, मुस्नदे अनस बिन मालिक, ह़दीस़:2951, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:95)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

या अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ हम सब को मिल जुल कर सुन्नतों भरी तह़रीक, दा'वते इस्लामी का म-दनी काम करते रहने की सआ़दत नस़ीब फ़रमा, या अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ हमारी सारी ख़त़ाएं मिटा और हमारे क़ुलूब को कीनए मुस्लिम से पाक फ़रमा, या अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ हमारी और हमारे म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

या रसूलल्लाह !

तू जो चाहे तो अभी मैल मेरे दिल के धुलें
कि ख़ुदा दिल नहीं करता कभी मैला तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

जहन्नम के ह़क़दार मत बनिये !

बाहमी शकर रन्जियों, बार बार सुल्ह़ कर लेने के बा वुजूद एक दूसरे पर की जाने वाली नुक्ताचीनियों के बाइस़ उठने वाले नित नए फ़ित्नों और इस के सबब होने वाले दीन के अ़ज़ीम म-दनी कामों को नुक़्स़ानों से बचाने, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और स़वाबे आख़िरत कमाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ आप ह़ज़रात की ख़िदमात में तह़रीरी ह़ाज़िरी की सआ़दत पा रहा हूं। अगर मेरी म-दनी इल्तिजाओं को ह़िर्ज़े जान बना लेंगे और कम अज़ कम 12 माह तक हर महीने फ़र्दन फ़र्दन या ज़िम्मादारान इन को इकट्ठा कर के इज्तिमाई त़ौर पर इसी "मक्तूबे अ़त्त़ार" का मुत़ालआ़ फ़रमा लेंगे तो आप सब गुलज़ारे अ़त्त़ार के गुलहाए मुश्कबार बन कर इस्लामी मुआ़शरे को सदा महकाते रहने में

إن شاء الله عزوجل कामियाबी पाते रहेंगे। अगर मेरी मा'रूज़ात को ख़ातिर में नहीं लाएंगे और ग़लती करने वाले की तन्ज़ीमी तरकीब[1] के मुताबिक़ इस्लाह़ करने के बजाए बिला मस्लह़ते शर-ई एक दूसरे को बताते फिरेंगे और आपस में लड़ते लड़ाते रहेंगे तो अ़दावतों, कीनों, ग़ीबतों, चुग़लियों, दिल आज़ारियों, ऐ़ब दरियों और बद गुमानियों वग़ैरा वग़ैरा हलाकत सामानियों के ज़रीए अपने आप को معاذ الله عزوجل जहन्नम का ह़क़दार बनाते रहेंगे। काश ! प्यारे प्यारे ***अल्लाहु रह़मान*** عزوجل के मुक़द्दस क़ुरआन और सुल्ताने दो[2] जहान, रह़मते आ़लमियान صلى الله تعالى عليه واله وسلم के पाकीज़ा फ़रमान के फ़ैज़ान से किया जाने वाला मुझ सरापा गुनाह व इ़स्यान का मुल्तजियाना बयान आप सब के क़ुलूब व अज़्हान पर चोट लगने का बाइ़स बन कर इस्लाह़ का सामान हो जाए। إن شاء الله عزوجل मेरा समझाना राएगां नहीं जाएगा। पारह 27 सूरतुज़्ज़ारियात की आयत नम्बर 55 में इर्शादे रब्बे जुल मिनन है :

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ

तर्जमए कन्जुल ईमान: और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाइदा देता है।

(पारह 27 अज़्ज़ारियात, आयत:55)

शैत़ान आपस में लड़वाता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! शैत़ान मर्दूद मुसल्मानों में फूट डलवाता, लड़वाता और क़त्लो ग़ारतगिरी करवाता है नीज़ उन्हें सुल्ह़ पर आमादा होने ही नहीं देता। बल्कि बारहा ऐसा भी होता है कि कोई नेक दिल इस्लामी भाई बीच में पड़ कर इन में ***सुल्ह़*** करवा भी दे तब भी त़रह़ त़रह़ के वस्वसे डाल कर, इन्हें उक्साता और भड़काता है। शैत़ाने मक्कार व नाबकार के वार से ख़बरदार करते हुए पारह 15 सूरए बनी इस्राईल की 53 वीं आयते करीमा में हमारा प्यारा प्यारा परवर्द गार عزوجل इर्शाद फ़रमाता है:-

اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ

तर्जमए कन्जुल ईमान: बेशक शैत़ान इन के आपस में फ़साद डालता है।

(पारह 15, बनी इस्राईल आयत:53)

पारह 7 सूरतुल माइदा आयत नम्बर 91 में अल्लाह रब्बुल इ़बाद का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है:

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ

तर्जमए कन्जुल ईमान: शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे।

(पारह 7 अल माइदा:91)

---

1. दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब येह है कि जिस की ग़लत़ी हो अव्वलन बराहे रास्त तन्हाई में उस की ग़लत़ी दूर करने की कोशिश करे। ना कामी की सूरत में ह़स्बे इजाज़ते शरीअ़त ब तदरीज ज़ैली ह़ल्क़ा, अ़लाक़ा, तह़सील, डिवीज़न, शहर व सूबा की मुशावरतों बा'दहू (या'नी इस के बा'द) मुल्क की इन्तिज़ामी काबीना के निगरानों से मस्अला ह़ल करवाए, काम न होने की सूरत में पाकिस्तान के इ़लावा दीगर मुमालिक के इस्लामी भाई मजलिसे बैनल अक़्वामी उमूर के मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार से रुजूअ़ करें, हर त़रफ़ से ना काम रहें तो आख़िर में मर्कज़ी मजलिसे शूरा की ख़िदमत में मस्अला पेश करें। शूरा का फ़ैसला ह़त्मी होगा और सब को मानना पड़ेगा, जब कि कोई शर-ई क़बाह़त न हो कि दा'वते इस्लामी की किसी भी मजलिस का कोई भी रुक्न हुक्मे शरीअ़त से मुतजाविज़ नहीं हो सकता, हर मुसल्मान के लिये अह़कामे शरीअ़त का पाबन्द होना ज़रूरी है।

गुस्सा बाइसे फ़साद है

मुसल्मानों को मिलजुल कर शैतान के फूट डलवाने वाले इस तबाह कार वार को बेकार बना देना चाहिये, यक़ीनन आपस के फसादात में दुन्या व आख़िरत के बे शुमार नुक़्सानात हैं। बात बात पर जज़्बात में आ जाने वाला ग़ुसीला शख़्स अक्सर फ़सादात का बाइस बन जाता है, ग़ुस्से वालों को ख़बरदार हो जाना चाहिये कि नफ़्स के सबब आने वाले ग़ुस्से में बे क़ाबू हो कर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी का इर्तिकाब कर के कहीं जहन्नम के गहरे गढ़े में न जा पड़ें, ग़ुस्से की सज़ा मुलाहज़ा कीजिये और अपने आप को अज़ाबे दोज़ख़ से बचाने की तज्वीज़ फ़रमाइये।

जहन्नम का मख़्सूस दरवाज़ा

महबूबे रब्बुल इबाद, राहते क़ल्बे नाशाद عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है, "जहन्नम में एक दरवाज़ा है उस से वोही दाख़िल होंगे जिन का ग़ुस्सा किसी गुनाह के बा'द ही ठन्डा होता है।"

(इत्तिहाफ़ुस्सादतुल मुत्तक़ीन, जिल्द:9, स़-फ़हा:318)

सुन लो नुक़्सान ही होता है बिल आख़िर उन को
नफ़्स के वासिते ग़ुस्सा जो किया करते हैं

मालिक बिन दीनार के सब्र के अन्वार

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين ज़ुल्मे ज़ालिमीन और सितमे काफ़िरीन पर सब्र फ़रमाते और किस तरह ग़ुस्से को भगाते थे इसे इस हिकायत से समझने की कोशिश कीजिये। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَفَّار ने एक मकान किराये पर लिया। उस मकान के बिल्कुल मुत्तसिल एक यहूदी का मकान था। वोह यहूदी बुग़्ज़ो इनाद की बुन्याद पर परनाले के ज़रीए गन्दा पानी और ग़लाज़त आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के काशानए अज़्मत में डालता रहता। मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ामोश ही रहते। आख़िरे कार एक दिन उस ने ख़ुद ही आ कर अर्ज़ की, जनाब! मेरे परनाले से गुज़रने वाली नजासत की वजह से आप को कोई शिकायत तो नहीं ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने निहायत ही नरमी के साथ फ़रमाया, "परनाले से जो गन्दगी गिरती है उस को झाड़ू दे कर धो डालता हूं।" उस ने कहा, "आप को इतनी तकलीफ़ होने के बा वुजूद ग़ुस्सा नहीं आता ? फ़रमाया आता तो है मगर पी जाता हूं क्यूंकि: (पारह:4, सूरए आले इमरान आयत नम्बर:134 में) ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ***महब्बत*** निशान है :

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:*** और ग़ुस्सा पीने वाले और लोगों से दरगुज़र करने वाले और नेक लोग अल्लाह के महबूब हैं।

(पारह:4, आले इमरान आयत:134)

जवाब सुन कर वोह यहूदी मुसल्मान हो गया।

(तज़्किरतुल औलिया, ज़िक्रे मालिक बिन दीनार, स़-फ़हा:51)

www.dawateislami.net

निगाहे वली में वोह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! नरमी की कैसी ब-र-कतें हैं ! नरमी से ***मुतअस्सिर*** हो कर वोह यहूदी मुसल्मान हो गया। गु़स्से की तबाहकारियों में से येह भी है कि इस से बुग़्ज़ व कीना पैदा होता है जिस से बा'ज़ अवक़ात क़त्ल व ग़ारतगरी तक नौबत पहुंच जाती है। बुग़्ज़ व कीना की तबाह कारियां पढ़िये ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से लरज़िये:-

तीन क़िस्म के अफ़राद

हजरते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا केहते हैं, कि नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे हक़ीक़त बुन्याद है: "तीन[3] क़िस्म के अफ़राद की नमाजे़ं उन के सर से एक बालिश्त भी नहीं उठतीं (1) क़ौम का वोह इमाम जिसे लोग पसन्द नहीं करते (2) वोह औ़रत जिस ने इस हा़लत में रात गुज़ारी कि इस का शौहर नाराज़ हो (3) वोह दो भाई जो (बिला मस्लेहते शर-ई) आपस में नाराज़ हैं।"

(सुनने इब्ने माजा, जिल्द:1, स-फ़हा:516, हदीस:971)

कीना परवर की शामत

हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ***सरवरे ज़ीशान, रह़मते आ़लमियान*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, "शा'बान की पन्दरहवीं[15] शब में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों को रह़मत की नज़र से देखता और सब को बख़्श देता है लेकिन मुश्रिक और कीना परवर नहीं बख़्शा जाता।"

(अल एहसान बत्तरतीब, स़ह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान, जिल्द:7, स-फ़हा:470, ह़दीस:5236)

मग़्फ़िरत में रुकावट

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ***अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है, "लोगों के आ'माल हर हफ़्ते में दो[2] दफ़्आ़ पेश किये जाते हैं या'नी पीर और जुमा'रात के रोज़, पस हर मो'मिन बन्दे को बख़्श दिया जाता है मा सिवाए उस आदमी के जिस का अपने भाई के साथ कीना हो, पस कहा जाता है इन दोनों[2] को छोड़ दो यहां तक कि मिल जाएं।"

(अल एहसान बित्तरतीब स़ह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान, जिल्द:7, स-फ़हा:471, ह़दीस:5638)

बिला वजह क़त्अ़ तअ़ल्लुक़ गुनाह है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला मस्लह़ते शर-ई मह़ज़ ज़ाती बुग़्ज़ो कीना की वजह से मुसल्मानों का एक दूसरे से तअ़ल्लुक़ात ख़त्म कर देना गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ***अल्लाह*** के

प्यारे नबी, मक्की म-दनी عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है: "किसी मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि अपने भाई को तीन³ दिन से ज़ियादा छोड़े, जिस ने तीन³ दिन से ज़ियादा छोड़ा और मर गया तो जहन्नम में दाख़िल हुवा।"

(सुनन अबी दावूद, अल हदीस:4914, जिल्द:4, स-फ़्हा:363)

ऐब छुपाने की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! बिला इजाज़ते शर-ई आपस की नाराज़गी के बाइस़ उ़मूमन फ़रीक़ैन के मा बैन बद गुमानियों, ग़ीबतों, चुग़लियों और ***तोहमतों*** जैसे कबीरा गुनाहों का त़वील सिल्सिला रहता है जिस के बाइस़ दोनों² ही फ़रीक़ अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार क़रार पाते हैं। आपस की नाराज़गियों के बाइस़ एक दूसरे के ऐब उछालने का गुनाह भी बहुत किया जाता है लिहाज़ा सख़्त एह़तियात़ की ह़ाजत है। अगर किसी मुसल्मान का ऐब मा'लूम हो जाए तो उसे छुपा देना ज़रूरी है। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुसल्मान के ऐब छुपाने में बड़ा स़वाब मिलता है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये ***मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम, सुल्त़ाने ज़ी हशम, ताजदारे ह़रम, सरापा जूदो करम, ह़बीबे मुकर्रम*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने किसी का पोशीदा ऐब देख कर छुपाया तो येह ऐसा है गोया इस ने ज़िन्दा दर गोर लड़की को ज़िन्दा किया।"

(अल मो'जमुल अवसत़, जिल्द:6, स-फ़्हा:97, ह़दीस़:8133)

www.dawateislami.net

मुसल्मान को कैसा होना चाहिये ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि ***रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, मह़बूबे रब्बुल आ'ज़म*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, एक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान का भाई है न इस पर ज़ुल्म करता है और न उसे बे यारो मददगार छोड़ता है जो अपने भाई की ह़ाजत पूरी करे अल्लाह तआ़ला उस की ह़ाजत पूरी करता है और जो किसी मुसल्मान की तकलीफ़ दूर करे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत की तकलीफ़ों में से उस की तकलीफ़ दूर फ़रमाएगा और जो किसी मुसल्मान की ऐब पोशी करे तो ख़ुदाए सत्तार عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के रोज़ इस की ऐब पोशी फ़रमाएगा।"

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, अल ह़दीस़:6580, स-फ़्हा:1394)

ऐब छुपाओ, जन्नत पाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, "जो शख़्स़ अपने भाई की कोई बुराई देख कर उस की पर्दा पोशी कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।"

(कन्ज़ुल उ़म्माल, अल ह़दीस़:6394, जिल्द:3, स-फ़्हा:103)

जब लड़ाई ठन जाती है

आपस की नाराज़गी के बाइस़ उ़मूमन एक दूसरे की ब कस़रत ग़ीबत की जाती है, ग़ीबत गुनाहे कबीरा, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। जब दिलों में नाराज़गी अस़र जमाती

और आपस में लड़ाई ठन जाती है तो ग़ीबतों और ***तोहमतों*** का सैलाब उमड़ आता और सूए जहन्नम हंकाता है। इस ज़िम्न में सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दो इर्शादात मुलाहज़ा फ़रमाइये और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से थर्राइये।

ग़ीबत का अज़ाब

प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है: "मैं शबे मे'राज ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जो अपने चेहरों और सीनों को तांबे के नाख़ुनों से छील रहे थे। मैं ने पूछा, ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? फ़रमाया: येह लोगों का गोश्त खाते (या'नी इन की ग़ीबत करते) और इन की इ़ज़्ज़त ख़राब करते थे।"

(सुनने अबी दावूद, अल ह़दीस़:4878, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:353)

तोहमत का अज़ाब

जो शख़्स़ किसी मुसल्मान पर "बोहतान" लगाए (या'नी ऐसी चीज़ कहे जो इस में नहीं) तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे ***रदग़तुल ख़बाल*** में रखेगा यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए। (सुनने अबी दावूद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:427, अल ह़दीस़:357) (***रदग़तुल ख़बाल*** जहन्नम में एक मक़ाम है जहां दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप जम्अ़ होगा)

मज़कूरा ह़दीसे़ पाक के इस हिस़्से़ "यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए" के तह़त ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मोह़द्दिस़ देहल्वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं: "या'नी यहां तक कि इस गुनाह से तौबा के ज़रीए, या जिस अ़ज़ाब का वोह मुस्तह़क़ हो चुका है, उसे भुगतने के बा'द पाक हो जाए।"

(अशिअ़्अ़तुल्लम्आ़त, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:290)

बद्दुआ़ देना इन्तिक़ाम है

याद रखिये ! अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाले के ह़क़ में बद्दुआ़ कर देना इन्तिक़ाम है, चुनान्चे ***मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे गिरामी है: "जिस ने ज़ालिम पर बद्दुआ़ की उस ने अपना इन्तिक़ाम ले लिया।"

(सुननुत्तिरमिज़ी, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:324, ह़दीस़:3563)

झगड़े से बचने की फ़ज़ीलत

अपने नफ़्स की ख़ातिर झगड़ने से मुसल्मान को बचना चाहिये ह़त्ता कि कोई दिल आज़ारी कर बैठे तब भी बह़स़ व तक़रार से इज्तिनाब कर के दर गुज़र से काम लेते हुए झगड़े से पहलू तही करने में ही भलाई है। ताजदारे दो[2] जहान, मदीने के सुल्त़ान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, "जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता, मैं उस के लिये जन्नत के (अन्दरूनी) कनारे में एक घर का ज़ामिन हूं।"

(सुनन अबी दावूद, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:332, ह़दीस़:4800)

मुसल्मान किसे केहते हैं ?

मुसल्मानों को आपस में झगड़ने से क्या वासित़ा ! येह तो एक दूसरे के मुहाफ़िज़ होते हैं, चुनान्चे ***अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है, (कामिल) मुसल्मान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से मुसल्मान को तकलीफ़ न पहुंचे और (कामिल) मुहाजिर वोह है जो इस चीज़ को छोड़ दे जिस से अल्लाह तआ़ला ने मन्अ़ फ़रमाया है।

(स़ह़ीह़ुल बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:15, ह़दीस़:10)

इस ह़दीसे़ पाक के तह़त ह़कीमुल उम्मत मफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि "या'नी कामिल मुसल्मान वोह है जो लुग़तन शरअ़न हर त़रह़ मुसल्मान हो वोह मो'मिन है जो किसी मुसल्मान की ग़ीबत न करे, गाली, ता'ना, चुग़ली वग़ैरा न करे, किसी को न मारे पीटे, न उस के ख़िलाफ़ कुछ तह़रीर करे।" मज़ीद फ़रमाते हैं कि "या'नी कामिल मुहाजिर वोह मुसल्मान है जो तर्के वत़न के साथ तर्के गुनाह भी करे, या गुनाह छोड़ना भी लुग़तन हिजरत है जो हमेशा जारी रहेगी।"

(मिर्आतुल मनाजीह़, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:29)

सरकारे ***मदीनए मुनव्वरा,*** सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे मुसल्मान की त़रफ़ आंख से इस त़रह़ इशारा करे जिस से उसे तकलीफ़ पहुंचे। (इत्तिह़ाफ़ुस्सादतुल मुत्तक़ीन, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:177) एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया, किसी मुसल्मान को जाइज़ नहीं कि वोह किसी मुसल्मान को ख़ौफ़ज़दा करे।

www.dawateislami.net

(किताबुज़्ज़ोहद लि इब्ने मुबारक, रक़म:688, स़-फ़ह़ा:240)

ईज़ाए मुस्लिम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन ह़ुक़ूक़ुल इबाद का मुआ़मला बड़ा नाज़ुक है, मगर आह ! आजकल बेबाकी का दौर दौरा है, अ़वाम तो कुजा ख़वास़ कहलाने वाले भी उ़मूमन इस त़रफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं, ग़ुस्से़ के (बेजा इज़्हार) का म-रज़ आ़म है, ग़ुस्से़ की वजह से अक्स़र ख़वास़ भी लोगों की दिल आज़ारी कर बैठते हैं और इस त़रफ़ उन की बिल्कुल तवज्जोह नहीं होती। यक़ीनन किसी मुसल्मान की बिला वज्हे शर-ई दिल आज़ारी कबीरा गुनाह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:24, स़-फ़ह़ा:342 में त़बरानी शरीफ़ के ह़वाले से नक़्ल करते हैं, सुल्त़ाने दो[2] जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है: "مَنْ آذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِىْ وَمَنْ اٰذَانِىْ فَقَدْاٰذَى اللّٰه" या'नी जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी।"

(अल मो'जमुल अवसत़, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:387, ह़दीस़:3607)

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ईज़ा देना कुफ़्फ़ार की मज़्मूम सिफ़त है

जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारह 22 सूरतुल अह़ज़ाब आयत 57 में इर्शाद फ़रमाता है:–

اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: बेशक जो ईज़ा देते हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है दुन्या और आख़िरत में और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

(पारह:22, अल अह़ज़ाब:57)

बुरा चर्चा करना बाइसे़ अ़ज़ाब है

ख़ास़ कर मुबल्लिग़ और ख़ुसूस़न बिल ख़ुसूस़ सुन्नी आ़लिम की किसी ख़ामी या ख़त़ा को बिला मस्लह़ते शर-ई किसी पर ज़ाहिर करना, लोगों में इस का बुरा चर्चा करना नेकी की दा'वत और इस्लाम की तब्लीग़ के मुआ़मले में बहुत बुरा और दुन्या व आख़िरत के लिये सख़्त नुक़्सा़न देह है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं: और अहले सुन्नत से ***बतक़्दीरे*** इलाही जो ऐसी लग़्ज़िशे फ़ाह़िश वाक़ेअ़ हो उस का इख़्फ़ा (छुपाना) बनस्से क़ुरआने अ़ज़ीम ह़राम। قال الله تعالى :

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चर्चा फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या और आख़िरत में।

(पारह:18, अन्नूर:19)

ख़ुसूस़न जब कि वोह बन्दगाने ख़ुदा ह़क़ की त़रफ़ बे किसी उ़ज़्र ***तअम्मुल*** के रुजूअ़ फ़रमा चुके। ***रसूलुल्लाह*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं "«مَنْ عَيَّرَ اَخَاهُ بِذَنْبٍ لَّمْ يَمُتْ حَتّٰى يَعْمَلَهُ»" जिस ने अपने भाई को किसी गुनाह की वजह से आर दिलाया वोह मरने से क़ब्ल इसी गुनाह में मुब्तला होगा।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:29, स़-फ़ह़ा:594, जामेउ़त्तिरमिज़ी, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:226, ह़दीस़:2513, दारुल फ़िक्र बैरूत)

बा'ज़ लोग बहुत ही झगड़ालू त़बीअ़त के मालिक होते हैं, ख़्वाह मख़्वाह तन्क़ीदें करते, बाल की खाल उतारते, बात बात पर फ़सादात बरपा करते और मुसल्मानों के लिये ईज़ा का बाइस़ बनते रहते हैं, ऐसे लोगों को डर जाना चाहिये कि पारह:30 सूरतुल बुरूज की दसवीं आयते मुबारका में रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे इब्रत बुन्याद है:

اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: बेशक जिन्हों ने ईज़ा दी मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औरतों को फिर तौबा न की उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और उन के लिये आग का अ़ज़ाब।

(पारह:30, अल बुरू ज आयत:10)

फ़ित्ना जगाने वाले पर ला'नत

ह़दीसे़ पाक में है, "फ़ित्ना सोया हुवा होता है उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत जो इस को बेदार करे।"

(अल जामेउ़स़्स़ग़ीर लिस्सुयूत़ी, अल ह़दीस़:5975, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

दुश्मन को दोस्त बनाने का कुरआनी नुस्ख़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह उसूल याद रखिये कि नजासत को नजासत से नहीं, पानी से पाक किया जाता है लिहाज़ा अगर कोई आप के साथ नादानी भरा सुलूक करे तब भी आप उस के साथ ***महब्बत*** भरा सुलूक करने की कोशिश फ़रमाइये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस के ***मुस्बत*** नताइज देख कर आप का कलेजा ज़रूर ठन्डा होगा। !وَاللّٰہِ الْمُجِیب عَزَّوَجَلَّ वोह लोग बड़े ख़ुशनसीब हैं जो ईंट का जवाब पत्थर से देने के बजाए ज़ुल्म करने वाले को मुआफ़ कर देते और बुराई को भलाई से टालते हैं। बुराई को भलाई से टालने की तरग़ीब के ज़िम्न में पारह 24 सूरए हा मीम अस्सज्दह की 34 वीं आयते करीमा में इर्शादे कुरआनी है:-

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَکَ وَبَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ کَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:*** ऐ सुनने वाले ! बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त।

(पारह:24, हा मीम अस्सज्दह आयत:34)

हुस्ने सुलूक का नतीजा

सय्यिदुना सद्रुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْهَادِی "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान शरीफ़" में बुराई को भलाई से टालने का त़रीक़ा बताते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं: म-सलन ग़ुस्से को सब्र से, जहल को हिल्म से, बद सुलूकी को अ़फ़्व (व दरगुज़र) से कि अगर कोई तेरे साथ बुराई करे तू मुआफ़ कर, या'नी इस ख़स्लत का नतीजा येह होगा कि दुश्मन दोस्तों की तरह ***महब्बत*** करने लगेंगे।

शाने नुज़ूल: कहा गया है कि येह आयत अबू सुफ़ियान के हक़ में नाज़िल हुई कि बा वुजूद उन की शिद्दते अ़दावत के नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के साथ सुलूके नेक किया, उन की साहिबज़ादी को अपनी ज़ौजिय्यत का श-रफ़ अ़ता फ़रमाया, इस का नतीजा येह हुवा कि वोह ***सादिक़ुल महब्बत*** जां निसार हो गए।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स-फ़हा:863, ज़ियाउल कुरआन)

बुराई को भलाई से टालने की दो म-दनी मिसालें

(1) आम मुआफ़ी का ए'लान

फ़त्हे मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا के मौक़अ़ पर वहां के सरदाराने कुरैश और आम लोग हरमे का'बा में जम्अ़ थे, येह लोग वोही थे जो मुसल्सल 21 बरस सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जानी दुश्मन रहे थे सरवरे काइनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सहाबा व सहाबिय्यात عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان पर अ़रसए हयात तंग कर दिया था, महबूबे रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان को हिजरत कर जाने पर मजबूर कर दिया था, येह वोही ज़ालिमीन थे जिन्हों ने इस्लाम और मुस्लिमीन को ख़त्म करने के लिये तीन सौ मील दूर जा कर भी ईमान वालों पर हम्ले किये और कई लड़ाइयां लड़ चुके

थे। और आज येह लोग सुल्ताने दो[2] जहान, रह्मते आ़लममियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने हक़्क़े तर्जुमान से अपनी क़िस्मत का फ़ैस़ला सुनने के मुन्तज़िर सर झुकाए ह़ाज़िर थे। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन लोगों से इस्तिफ़्सार फ़रमाया: आज तुम क्या केहते हो और क्या गुमान करते हो ? लोगों ने तीन[3] मरतबा कहा, आप ह़लीमो रह़ीम बाप के बेटे और ऐसे ही चचा के बेटे हैं। सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: मैं वोह कहूंगा जो यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कहा था:

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:*** कहा आज तुम पर कुछ मलामत नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआ़फ़ करे और वोह सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान है। (पारह:3, यूसुफ़:92)

(अस्सुननुल कुब्रा लिल बैहक़ी, जिल्द:9, स़-फ़ह़ा:199, ह़दीस़:18275, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

ख़ार बिछाने वालों को भी फूलों का इन्आ़म दिया
आप ने ख़ून के प्यासों को भी राह़त का पैग़ाम दिया

(2) सौ कोड़ों की ज़ालिमाना सज़ा

लाखों मालिकिय्यों के अ़ज़ीम पेश्वा और मश्हूर आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने सिने 146 हिजरी में फ़त्वा दिया, "अ़ब्बासी ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र ने हुकूमत के दबाव से अ़वाम से जबरन बैअ़त ली है, इस लिये हुकूमत की इत़ाअ़त अ़वाम पर फ़र्ज़ नहीं, येह ***बैअ़त*** शर-अ़न ***बैअ़त*** ही नहीं।" इस वजह से ***मदीनए मुनव्वरा*** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيْماً و تَكْرِيماً के गवर्नर जा'फ़र बिन सुलैमान अ़ब्बासी के हुक्म से आप को गरिफ़्तार कर के आप पर दर्जे ज़ैल फ़र्दे जुर्म आ़इद की गईं:

(1) आप ने अ़ब्बासी हुकूमत की बैअ़त को कल्अ़दम क़रार दिया है।

(2) अ़वाम को हुकूमत की इत़ाअ़त से इन्ह़िराफ़ (या'नी मुख़ालफ़त) करने पर उभारा है।

(3) आप ने सरीह़ बग़ावत का इर्तिकाब किया है। इस जुर्म की पादाश में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को सौ कोड़े लगाए गए और कन्धों से हाथ उतरवा दिये गए जिस की वजह से आख़िरी उ़म्र तक आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पूरी त़रह़ हाथ न उठा सके, ह़त्ता कि अपने बदने मुबारक पर अपने हाथों से चादर भी दुरुस्त न फ़रमा सकते थे।

रावी का बयान है, जिस वक़्त कोड़े लगाए जा रहे थे मैं वहीं मौजूद था, जब जब कोड़ा पड़ता आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़बाने पाक से येह दुआ़ निकलती, اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَهُمْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعلَمُون या'नी ***"या अल्लाह !*** عَزَّوَجَلَّ इन लोगों को मुआ़फ़ फ़रमा दे कि येह ह़क़ीक़त से ना आश्ना हैं।" कोड़ों की मार की शिद्दत से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बिल आख़िर बेहोश हो गए। होश में आते ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़बाने मुबारक से पहला जुम्ला येह जारी हुवा: "लोगो ! गवाह रहो कि मैं ने अपने मारने वालों को मुआ़फ़ कर दिया।"

(मा'दने अख़्लाक़, ह़िस्सा:3, स़-फ़ह़ा:36,37)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

सलाम उन पर बराए नफ़्स जो बदला न लेते थे
सलाम उन पर जो दुश्मन को दुआ़ए ख़ैर देते थे

मुआ़फ़ी के मुतअ़ल्लिक़ इर्शादे इलाही

अ़फ़्वो दरगुज़र के ***मुतअ़ल्लिक़*** पारह 9, सूरतुल अअ़्राफ़ की आयत नम्बर 199 में इर्शाद होता है:-

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: (ऐ मह़बूब) मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।

(पारह:9, अल अअ़्राफ़, आयत 199)

जन्नत पाने के तीन[3] नुस्ख़े

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है: रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: तीन[3] बातें जिस शख़्स़ में होंगी अल्लाह तआ़ला (क़ियामत के दिन) उस का ह़िसाब बहुत आसान त़रीक़े से लेगा और उस को (अपनी रह़मत से) जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा, मैं ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह क्या बात है?

(1) फ़रमाया जो तुम से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ करे तुम उस से मिलाप करो।

(2) जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उसे अ़त़ा करो और

(3) जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उस को मुआ़फ़ कर दो।

www.dawateislami.net

(अल मो'जमुल अवसत़, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:263, अल ह़दीस़:909)

सुन्नतों की धूमें मचाने का म-दनी जज़्बा रखने वाले इस्लामी भाइयो! आपस के झगड़ों के सबब सरज़द होने वाले ***सय्यिआत*** या'नी गुनाहों और फिर इन गुनाहों की पादाश में होने वाले अ़ज़ाबात की वईदात का इजमाली (या'नी मुख़्तस़र सा) बयान ह़ाज़िरे ख़िदमात कर के दर गुज़र पर मब्नी रिवायात व ह़िकायात अ़र्ज़ करने के बा'द अब तस्फ़िया करवाने के मुक़द्दस जज़्बात दिल में लिये स़ुल्ह़ के मुतअ़ल्लिक़ बा'ज़ आयात व रिवायात अ़र्ज़ करता हूं।

अल्लाह स़ुल्ह़ करवाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, एक रोज़ सरकारे दो आ़लम, ***नूरे मुजस्सम,*** शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह! عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मेरे मां बाप क़ुरबान! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस लिये तबस्सुम फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया: मेरे दो उम्मती अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दो ज़ानू गिर पड़ेंगे, एक अ़र्ज़ करेगा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! इस से मेरा इन्स़ाफ़ दिला कि इस ने मुझ पर ज़ुल्म किया था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुद्दई (या'नी दा'वा करने वाले) से फ़रमाएगा: अब येह बेचारा (या'नी जिस पर दा'वा किया गया है वोह) क्या करे इस के पास

तो कोई नेकी बाक़ी नहीं। मज़्लूम (मुद्दई) अ़र्ज़ करेगा, मेरे गुनाह इस के ज़िम्मे डाल दे। इतना इर्शाद फ़रमा कर सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रो पड़े। फ़रमाया: वोह दिन बहुत अ़ज़ीम दिन होगा। क्यूंकि उस वक़्त (या'नी बरोज़े क़ियामत) हर एक इस बात का ज़रूरतमन्द होगा कि इस का बोझ हल्का हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मज़्लूम (या'नी मुद्दई) से फ़रमाएगा, देख तेरे सामने क्या है? वोह अ़र्ज़ करेगा, ऐ परवर्द गार! عَزَّوَجَلَّ मैं अपने सामने सोने के बड़े शहर और बड़े बड़े महल्लात देख रहा हूं, जो मोतियों से आरास्ता हैं। येह शहर और उ़म्दा महल्लात किस पैगम्बर या सिद्दीक़ या शहीद के लिये हैं? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा: येह उस के लिये हैं जो इन की क़ीमत अदा करे। बन्दा अ़र्ज़ करेगा, इन की क़ीमत कौन अदा कर सकता है? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, तू अदा कर सकता है। वोह अ़र्ज़ करेगा, वोह किस त़रह़? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, इस त़रह़ कि तू अपने भाई के हुक़ूक़ मुआ़फ़ कर दे। बन्दा अ़र्ज़ करेगा, ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ! मैं ने सब हुक़ूक़ मुआ़फ़ किये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा: अपने भाई का हाथ पकड़ और दोनों इक्ट्ठे जन्नत में चले जाओ। फिर सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से डरो और मख़्लूक़ में सुल्ह़ करवाओ क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी बरोज़े क़ियामत मुसल्मानों में सुल्ह़ करवाएगा।

(अल मुस्तदरक, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:795, अल ह़दीस़:8758)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! ह़दीसे़ मज़्कूर मुसल्मानों के दरमियान **सुल्ह़** करवाने की सुन्नते इलाहिय्या और **सुल्ह़** की तरग़ीब दिलाने की सुन्नते मुस्त़फ़विय्या की मुश्कबार ख़ुश्बूओं से महक रही है। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ करे हम भी इस सुन्नते ख़ुश्बूदार से अपने ज़ाहिर व बात़िन को मुअ़त्तर व मुअम्बर कर के इस्लामी भाइयों में भाईचारगी की भरपूर सअ़्य करें और अपने माह़ौल को सुल्ह़ व ख़ैर की ख़ुश्बूओं से महकता गुलज़ार बल्कि मदीने का बाग़े सदाबहार बना दें। इन्हीं मुबारक अतवार को इख़्तियार करने की तरगीब दिलाते हुए हमारा रब्बे मुजीब عَزَّوَجَلَّ पारह 26 ***सूरतुल ह़ुजुरात*** की दस्वीं आयते करीमा में इर्शाद फ़रमा रहा है:-

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَیْنَ اَخَوَیْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: मुसल्मान मुसल्मान भाई हैं तो अपने दो भाइयों में सुल्ह़ करो और अल्लाह से डरो कि तुम पर रह़मत हो।

(पारह:26, अल ह़ुजुरात आयत:10)

क़ुरआने करीम के बयान कर्दा अख़्लाक़े ह़सना के मज़्हरे अतम्म, ताजदारे ह़रम, नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मोह़तरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस सुन्नत भी हमें **सुल्ह़** करवाने का अ़मली नुमूना अ़त़ा फ़रमा रही है। चुनान्चे

सुल्ह़ करवाना सुन्नत है

ख़ज़ाइनुल इरफ़ान स़-फ़ह़ा: 229 पर है, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दराज़गोश पर कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि अन्सा़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم के पास से गुज़र हुवा, वहां कुछ देर तवक्क़ुफ़

फ़रमाया (या'नी ठहरे), इस जगह दराज़गोश ने पेशाब किया तो इब्ने उबय्य ने नाक बन्द कर ली। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दराज़गोश का पेशाब तेरे मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो तशरीफ़ ले गए। इन दोनों की बात बढ़ गई और दोनों की क़ौमें आपस में लड़ गईं और हाथा पाई तक नौबत पहुंची। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ लाए और दोनों में **सुल्ह़** करवा दी। इस मुआ़मले में येह आयत नाज़िल हुई:-

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और अगर मुसल्मानों के दो गुरोह आपस में लडें तो इन में **सुल्ह़** करवाओ।

(पारह:26, अल हु़जुरात आयत:9)

एक और मक़ाम पर सुल्ह़ की तरग़ीब दिलाते हुए इर्शाद होता है:

وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ط وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और **सुल्ह़** ख़ूब है, और दिल लालच के फन्दे में हैं।

(पारह:5, अन्निसा आयत:128)

इमामे ह़सन ने सुल्ह़ करवाई

इन आयाते मुबारका पर अ़मल और **सुल्ह़** करवाने की मीठी सुन्नत के ख़ुशनुमा रंग से हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की मुबारक सीरत ख़ूब रंगीन व मुज़य्यन है येह मुबारक ह़ज़रात मुसल्मानों में **सुल्ह़** व अमन के म-दनी फूल खिलाने के लिये बड़ी से बड़ी क़ुरबानी देने से भी दरेग़ न फ़रमाते, चुनान्चे इस की एक रौशन मिसाल, हमारे मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नवासए आ़ली वक़ार, नौ जवानाने अहले जन्नत के सरदार, ***ह़लीमुत्तबअ़*** व बुर्दबार, इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं कि जिन के बारे में हमारे प्यारे प्यारे रह़मत वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं ख़बरे ग़ैब असर इर्शाद फ़रमा दी थी, "मेरा येह बेटा सय्यिद (या'नी सरदार) है और उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला इस के ज़रीए मुसल्मानों के दो गुरोहों के माबैन **सुल्ह़** करवाएगा।"

(स़ह़ीह़ुल बुख़ारी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:509, ह़दीस़:3629)

चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिदे माजिद अमीरुल मुअ्मिनीन, मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की शहादत के बा'द 6 माह और चन्द दिन मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ रहे और फिर मुसल्मानों के दो गुरोहों में सुल्ह़ करवाने के लिये ख़िलाफ़त जैसे अ़ज़ीम मन्सब से दस्तबरदारी इख़्तियार फ़रमाई।

नफ़्ली स़लातो ख़ैरात से अफ़्ज़ल काम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन اِصْلَاحِ بَیْنَ النَّاس (या'नी लोगों के दरमियान सुल्ह़ करवाओ) के मुत़ाबिक़ अ़मल करना एक इन्तहाई अ़ज़ीम म-दनी काम है। इस से अल्लाह तआ़ला इतना ख़ुश होता है कि नफ़्ली नमाज़, रोज़े और स़-दक़ा देने से भी नहीं होता।

हज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि इमामुन्नबिय्यीन व मुर्सलीन, सय्यिदुल मुर्शिदीन व स्सालिहीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से) इर्शाद फ़रमाया: "क्या तुम्हें नमाज़, रोज़े और स-दक़ा देने से अफ़्ज़ल काम की ख़बर न दूं ?" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, क्यूं नहीं (ऐ अल्लाह के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)। फ़रमाया: वोह काम **सुल्ह** करवा देना है और फ़साद फैलाना तो (दीन को) मूंडने वाला (काम) है।

(मुस्नदे इमाम अहमद, अल हदीस:27578, जिल्द:10, स-फ़हा:422, दारुल फ़िक्र, बैरूत)

अच्छा इस्लामी भाई कौन ?

देखा आपने ! इस्लामी भाइयों में **सुल्ह** करवा देना कैसा फ़ज़ीलत व अ़ज़्मत वाला काम है। तो वोह कितना अच्छा और भला इस्लामी भाई है जो अपने छोटों पर शफ़्क़त और अपने बड़ों की इ़ज़्ज़त, हम मश्रब दोस्तों की मुरुव्वत व हुर्मत और तमाम इस्लामी भाइयों की भलाई और ख़ैरख़्वाही के तर्ज़े अ़मल को इख़्तियार करते हुए अपने पाकीज़ा किरदार और नेक गुफ़्तार से मुसल्मानों में से शर्रो फ़साद को ख़त्म करने के लिये हमेशा कोशां रहे।

सगे मदीना का मान रख लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बराए करम ! मुझ (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ) का मान रख लीजिये। मेरा दिल न तोड़िये, अब गुस्सा थूक दीजिये और सआ़दतमन्दी का सुबूत देते हुए आपस के इख़्तिलाफ़ात ख़त्म कर दीजिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रो रो कर तौबा कीजिये और एक दूसरे की साबेक़ा लग़्ज़िशें मुआ़फ़ कर दीजिये। एक दूसरे से मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लेने के बा'द महरबानी फ़रमा कर नीचे दी हुई तहरीर को पढ़/सुन कर और अच्छी तरह समझ कर अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये नीचे दस्तख़त कर के इस की COPY मुझे इरसाल फ़रमा कर मुझ पापी व बदकार, गुनहगारों के सरदार का दिल ख़ुश कर दीजिये।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सब इस्लामी भाइयों को जम्अ़ कर के जब मक्तूबे अ़त्तार पढ़ कर सुनाया गया तो उन्हों ने ब चश्मे नम इख़्तिलाफ़ात ख़त्म कर दिये और आपस में **सुल्ह** कर के तहरीर पर दस्तख़त कर दिये)

सुल्ह हो गई !

हम जेल में दस्तख़त कन्दगान (22 इस्लामी भाइयों) ने मक्तूबे अ़त्तार पढ़ा/सुना, हमें अपनी बे एहतियातियों का इक़रार है, हमारे सरों पर नदामत का बार है, हम दरबारे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में तौबा करते हैं। हम ने एक दूसरे को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मुआ़फ़ कर दिया है। आज के बा'द किसी भी साबिक़ा ग़-लती पर कोई किसी की पकड़ नहीं करेगा और न ही इस का ता'ना या हवाला देगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आपस में मिलजुल कर म-दनी काम करेंगे। अगर आइन्दा एक फ़र्द की ग़लती का दूसरे को पता भी चला तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ किसी से तज़्किरा किये बिग़ैर बराहे रास्त उस की इस्लाह की कोशिश करेगा, नाकामी की सूरत में तन्ज़ीमी तरकीब के मुताबिक़ इस मस्अले के हल की तरकीब करेगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (रिसाले में इस्लामी भाइयों के दस्तख़त हज़्फ़ कर दिये हैं)

“सुल्ह में ख़ैर ही ख़ैर है” के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से 16 निय्यतें”

दो म-दनी फूलः

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का स़वाब नहीं मिलता

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना स़वाब भी ज़ियादा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आपने मक्तूबे अ़त्तार “ना चाकियों का इलाज” पढ़ लिया। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दिल ने ज़रूर चोट खाई होगी, हिम्मत कीजिये और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर नीचे लिखी हुई 16 निय्यतें कर लीजिये कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है: نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ या'नी “मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।”

(त़बरानी मो'जम कबीर, ह़दीस़:5942, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:185)

- अपने नाराज़ इस्लामी भाइयों और
- रूठे हुए रिश्तेदारों से ख़ुद आगे बढ़ कर रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये **सुल्ह** कर लूंगा
- पिछली ख़त़ाओं पर किसी को शर्मिन्दा नहीं करूंगा
- सुनी सुनाई बातों में आ कर किसी से तअ़ल्लुक़ात ख़राब नहीं कर लूंगा
- बद गुमानियों ● ऐब दरिय्यों ● दिल आज़ारियों ● ग़ीबतों ● चुग़लियों
- इल्ज़ाम तराशियों और शुमाततों (किसी के नुक़्स़ान पर مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ुश होने को “शुमातत” केहते हैं) से बचता रहूंगा।
- ग़ीबत व चुग़ली सुनने से भी बचूंगा
- ह़त्तल वुस्अ़ इस्लामी भाइयों में सुल्ह़ करवाऊंगा
- जिस जिस ने मेरी दिल आज़ारी की उस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ करता हूं
- जो कोई आइन्दा मेरा दिल दुखाए उस को भी अपना ह़क़ पेशगी मुआ़फ़ करता हूं (याद रहे ! पेशगी मुआ़फ़ कर देने वाले मुसल्मान की बिला इजाज़ते शर-ई दिल आज़ारी करने वाला ख़ुदाए जुलजलाल عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के वबाल में बहर ह़ाल गरिफ़्तार होगा)
- जो मेरे साथ बुराई करेगा हुक्मे क़ुरआनी की इत़ाअ़त करते हुए उस के साथ भलाई करने की कोशिश करूंगा।
- येह रिसाला कम अज़ कम 12 अ़दद तक़्सीम करूंगा (ख़ुसूस़न अपने रिश्तेदारों और उन मुसल्मानों तक पहुंचाइये जिन की आपस में नाराज़गियां हों)

www.dawateislami.net